Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 2, Mar-Apr – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 03/04/2020 Accepted on : 14/04/2020 Publication Date: 30/04/2020

नयी कविता और आधुनिकता बोध–कनुप्रिया के सम्बन्ध में

डॉ. श्रवण कुमार
सहायक आचार्य (हिन्दी)
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर

कविता में मूलपाठ, पाठ, पुनर्पाठ एवं नव्यपाठ के रूप में कवि अपने भाषा कौशल द्वारा काव्य व्यापार करता है। कवि अपनी प्रतिभा के बल पर परिवेश, घटना में परिवर्तन, ग्राह्य–अनुग्राह्य एवं अनुग्राहक भाव द्वारा कार्यान्वति में सौंदर्य सृष्टि करता है। कवि प्रचलित मूल कथा में संशोधन करके पुनर्पाठ नवीन संशोधन करके नरत्व पर नारायणत्व का समाहार कर देता है। कवि अपने अद्‌भुद कल्पना शक्ति द्वारा अविद्यमान की कल्पना करके नवीन प्रसंगउद्‌भूद करता है जिसे अपूर्व चामत्कारिकता कहते हैं कवि प्रसंगानुकूल भाषा द्वारा भावपूर्ण मार्मिक प्रकरणों को उद्‌घाटित करता है। सच यह है कि यह नव्य कविता मूल में खोटी होती है। आज कविता को 'मधुमति' काव्य की भूमिका का अंकुरण नहीं मिला। महावीर प्रसाद द्विवेदी कविता में भाषा के संबंध में लिखते हैं कि 'भाषा गद्य–पद्य मिश्रित होनी चाहिए'। गद्य–कथन एवं उक्ति रूप है जबकि पद्य शास्त्रीय है यथा राम–शब्द रूप है नाम रूप है तो रामचंद्र पद्य रूप है यथा राम इव चंद्र अर्थात राम की तरह चंद्र (इंद्र) वह राम नहीं है नवरा–वर्ण विपर्यय नवरा–रावन है विशिष्ट राम है। यह कविता का पाठ या मूल पाठ राम है, नव्य पाठ रामचंद्र है। रावण है। इस विभ्रम, संशय,अन्ध दृष्टि,चामत्कारिक रूप में सत्य को परखने के लिए कविता नव्य दृष्टि देती है।

गद्य आलोचना दृष्टि से सभ्य जन घबराते हैं कविता का सौंदर्य कलावाद के लिए कला के लिए है कलावाद सौंदर्यशास्त्र के लिए कष्टकारक है कविता में आज लेखिम विचलन आ गया है चित्र, रंग–□ द्युति, ■ मसि छाया–सेडो, बिम्ब, वर्ण –E स KA,13 मेरा 7, C= क, C= सी आदि रेखीय विचलन आधुनिक कविता में देखने में मिलते हैं। कविता जल और तरंग की तरह है उसकी सीमाएं नदी बांध की तरह हैंवह भोजन में नमक की मात्रा को प्रदर्शित करती है। वह (कविता) जीवन की भाषा (प्राण) एवं शैली (जीवन)को प्रदान करती है। कवि भाषा रूपी रथ पर सवार होकर काव्य भाषा द्वारा महारथी बन जाता है। भाव एवं वस्तु का कविता व्यापार है आचार्य रामचंद्र शुक्ल रहस्यवाद को नहीं स्वीकार करते हैं इसलिए कबीर के रचना के बारे में आचार्य रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं– ''भारतीय ब्रह्म ज्ञान और योग साधना को लेकर चलने वाली ज्ञानाश्रयी शाखा की रचनाएं साहित्यिक नहीं हैं। क्योंकि उसमें भक्ति रस में मग्न करने वाली सरसता की कमी पाई जाती है।''

कवि के अंतः प्रेरणा के संदर्भ में:

कवि धर्मवीर भारती ने 'कनुप्रिया' रचना में युगीन संदर्भों के माध्यम से निरूपण किया है। यह प्रबंध काव्य है। आज मनुष्य की दुर्दान्त शक्तियाँ निर्मम गति से आगे बढ़ रही हैं आज का मनुष्य एकांकी हो गया है वह लाचार हो जाये तो कहाँ जाये किससे बात करे? ऐसे में वह कुण्ठा, हताशा, विक्षुब्ध, विद्रोही अलगाववादी एवं प्रतिशोध की ज्वाला में धधक रहा है।

कनुप्रिया प्रबंध काव्य पूराख्यानक है जो नवीन कविता के रूप में हमें जीवन जीने की दृष्टि देता है। इस काव्य की भाव भूमि मिथकीय रही है। आज मनुष्य भाई–भतीजावाद, तटस्थता की समस्या, मानव का अस्तित्व, मनुष्य की व्यक्तिवादी दृष्टि, नये मूल्यों की स्थापना, व्यष्टि एवं समष्टि का द्वंद्व तथा आधुनिकता का संकट एवं बौद्धिक व्यापार, आस्था विश्वास का टूटना परिवेश की घुटन, व्यक्ति की आकांक्षाएं तथा कवि ने जन समस्या एवं नारी समस्या को आधारभूत समस्या माना है। इस प्रबंध काव्य ने भारती जी के कृष्ण के स्थान पर भारतीयता को अधिक महत्व दिया है जिसमें कृष्ण की सृष्टि में 'भारतीय मनीषा' नव्य सोच के साथ उद्‌घाटित की है। राधा परम्परा का प्रतीक है तो कृष्ण जातीय श्रेष्ठता का। राधा अर्थात् धारा वर्ण विपर्यय करके परंपरा का वाचक बना है। इसी परम्परा ने भारतीय जातिवाद मूल पाठ कृष्ण का पुनर्पाठ

इन्द्र के गुण उपस्थापित कर **क्रम भंग विचलन** द्वारा कृष्ण को पुनः स्थापित किया है अर्थात् कृष्ण नस्लीय नंदवंशी हैं किंतु आर्यों ने इंद्र को नीला रंग पोतकर कृष्णवर्णी बनाया है यह समन्वय किया है यथा–

'नीले रंग से रंगा गया में अच्छी हुई बहुत यह बात।
जंगल में पशुओं को ठगने का ढंग नया लगा है हाथ।
डर न होकर, निडर होकर आ जाओ तुम मेरे पास।
कोई मुझे बनाकर चुन लो, कोई मंत्री कोई दास।।'

इस प्रकार इंद्र पशुपति शिव बनकर नवीन कृष्ण के रूप में अवतारणा करता है 'अंधा–युग' में धर्मवीर भारती ने जरा –जार (नर–व्याध) द्वारा कृष्ण की हत्या इंद्र ने कर दी थी।अतः गुप्त रूप में छद्म रूप में नव कृष्ण का उदय हो गया। यह इंद्र कृष्ण का आद्यबिम्ब है। यह कविता में संज्ञा सम्बन्धि भाषा का क्रमभंग विचलन है।

आज भारत–पाक, नस्लवादी झगड़े, भारत चीन के व्यापारिकझगड़े मात्र परिस्थितियों से निर्मित मानवीय चेतना को जागृत रखने के लिए निर्विकल्प अनास्था है। हमारे पास पाक और चीन के प्रति कोई आस्था नहीं है।युद्ध मात्र बहाना है यह सब कूटनीति जन्य सम्बन्ध है।

कनुप्रिया का मिथकीय काव्य स्वरूप –

यहाँ कनुप्रिया राधा या धारा या परम्परा का प्रतीक है वह कामयोगिनी है। वह प्रेम का स्वरूप है, पांचाली की तरह वैष्णव परकीया है तथा सोलह कलाओं में निपुण है। भारती जी का कृष्ण भी चंद्रकलाओं से युक्त है वह कामी, योगी, संयमी, सहज एवं रास लीला करने वाला है। जो 'कनुप्रिया' में उद्धृत किया गया है जो मिथ मात्र है क्योंकि कृष्ण के माता पिता को कश्यप (कंश – शक) इन्द्र ने कारा में डाल दिया था वहीं कृष्ण का जन्म होता है। वह आजीवन इन्द्र (जार) एवं ग्वाल के रूप में दो परम्पराओं को संरक्षित कृत्रिम रूप से संरक्षित करता है। 'अन्धायुग' में कृष्ण–भोगी और योगी दोनों रूप में है। जबकि कृष्ण निवृत्ति–मार्गी या ज्ञान–मार्गी था। जिसका सम्पूर्ण साहित्य में भारतीय विचारधारा विरोध करती है। तुलसी उस ज्ञानधारा के ब्रह्म को फटकार लगाते हैं–**'अलखहि अलखहि का लेखे राम नाम जप नीच।'** सूर का सम्पूर्ण भ्रमर–गीत उस कृष्ण की निवृत्ति–मार्गी ज्ञान धारा का विरोध करता है – निर्गुण कौन देस को वासी? आदि विभेद उस दो धाराओं का प्रदर्शित करते हैं जो एक आर्यों की विजित धारा है दूसरी धारा पराजित है। जो ज्ञान के रूप में निर्गुण धारा है – निवृत्ति–मार्गी है। एक दास है दूसरी नाथ, एक राजा है दूसरी रंक। एक इन्द्र है दूसरा ग्वाल (ग्वार) एक अभिजन है दूसरा दलित। जिसमें कृष्ण के स्थान पर इन्द्र की अवतारणा को छिपा दिया गया है। मत्स्य–इन्द्र काममण्डित होने से बाल लीलाएँ एवं रास लीलाएँ करता है। मत्स्य शब्द काम कलाओं का प्रतीक है। वज्र साधना का अंग है। यह इस काव्यभूमि का अन्तः साक्ष्य है। धर्मवीर भारती ने 'कनुप्रिया राधा उसमें केशौर्य सुलभ मनःस्थितियाँ विद्यमान है जो विवेक से अधिक तन्मयता इतिहास की उपलब्धियों से अधिक सहज में सार्थकता पाती है।'[1]

आज की नारी की स्थिति के बारे में 'कनुप्रिया' की राधा चिंतित है 'स्त्री का प्रेम' उसके जीवन का अवदान होता है। प्रत्येक स्त्री प्रथम प्रेम को चाह कर भी नहीं भूला पाती है। उसका प्रभाव स्त्री के कोमल मन में सदा रहता है। यहाँ कुछ अन्तःसाक्ष्य भारती जी से छूट गये वो यह है कि आदिवासियों में 'एक ही पति' 'पतिर्एक अस्ति।' की अवधारणा रही है। किंतु आर्यों द्वारा अनार्यों पर विजय के बाद अनार्या स्त्रियों के नाम के पीछे देवी प्रत्यय जोड़ दिया गया। किन्तु किसी भी आदिवासी व्यक्ति के नाम के पीछे देव शब्द नहीं आया। 'देव' शब्द का प्रयोग राजा, इन्द्र, सामन्त एवं पूंजीपति के लिए देशकाल परिस्थिति के अनुसार लगाते रहे हैं। इन्द्र की पदवी व्यास, अर्जुन एवं राजा तथा चक्रवर्ती राजा के लिए प्रयुक्त होती थी प्रत्येक आर्य भरत, आर्यपुत्र के नाम से जाना जाता था। इन्द्र की तानाशाही किंतु बदनाम हुआ कृष्ण। रासलीला कोई करे बदनामी किसके नाम मढे –

1धर्मवीर भारती–डॉ. रमेश कुन्तल मेघ सं. डॉ. गौतम पृ.सं.288

'बदनाम होते हैं बट भार,
घर तो रखवालों ने लूटा।
हमारी चाँद सी सितारों सी
रातों को अपने वालों ने लूटा।'

यहाँ इन्द्र को कृष्ण तथा कृष्ण को इन्द्र का सारथी बनाकर गीता में प्रस्तुत किया है तथा नवीन अवतारणा के रूप में इन्द्र (अर्जुन) तथा कृष्ण सारथी रूप में है। एक राजा दूसरा रथ का सारथी। धर्मवीर भारती ने श्रीकृष्ण का अत्यहं का प्रदर्शित किया है –

'तुम्हारी सम्पूर्ण सृष्टि का अर्थ है
मात्र तुम्हारी इच्छा
और तुम्हारी सम्पूर्ण इच्छा का अर्थ है कैवल मैं।
कैवल मैं, कैवल मैं।'[2]

श्रीकृष्णचंद्र (इन्द्र) के अनेकों रानियाँ थीं उसे आदिमभय के कारण राधिका 'केलि सखि' प्रसंग में आधुनिक स्त्रीजन्य पीड़ा से पर पति गमन भय से परेशान है –

''फिर भी राधा भयभीत है अगर वह निखिल सृष्टि
मेरा लीला तन है, तुम्हारे आस्वादन के लिए
तो यह जो भयभीत है..... वह छाया तन
किसका है? किसलिए है.....मेरे मित्र।''[3]

भारती जी ने 'गीता' दर्शन को राधा से क्यों जोड़ा?क्योंकि गीता ही राधा है। भाषिक दृष्टि से विचार करें तो ग्रिम नियम में – कीरता – कीता – गीता – सीता रूप बन जाता है यथा कार–सीएआर। राधा परम्परा से कीराता? किराता जाति अर्थात् किं राता रेड इण्डियन किं वा। या ब्लेक विचारणीय है। सत्यं एकं विप्रा बहुधा वदन्ति। राम काले होने से कृष्ण है तथा 'सीता' संज्ञा विचलन द्वारा किराता अर्जुनीयम् से कीता (गीता– सीता) एवं अर्जुन दोनों क्रमशः राधा और इन्द्र या ऋक्वैदिक इन्द्र एवं शचि के रूप में रूढ़ हो गये हैं। महाभारत (गीता) या सीता युद्ध का माध्यम नारी था।

कृष्णइन्द्र विजय से उद्घोषणा करता है –

तुम्हारे सम्पूर्ण अस्तित्व का अर्थ है मात्र तुम्हारी सृष्टि,
तुम्हारी सम्पूर्ण सृष्टि का अर्थ है मात्र तुम्हारी इच्छा,
और मात्र तुम्हारी सम्पूर्ण इच्छा का अर्थ है केवल मैं।
केवल मैं, केवल मैं।[4]

श्रीमद्भगवद् की गीता किस प्रकार सीता बनकर नहीं पांचाली बनकर प्रश्न करती है

मेरा यह जिस्म कल तक जो जादू था
सूरज था वेग था, तुम्हारे आश्लेष में
आज वह जुड़े से घिरे हुए बेले सा,
टूटा है म्लान है, दुगुना सुनसान है
बीते हुए उत्सव–सा, उठ हुए मेले–सा।[5]

2कनुप्रिया–धर्मवीर भारती, द्वि.सं.44
3कनुप्रिया–धर्मवीर भारती, द्वि.सं.48
4कनुप्रिया–धर्मवीर भारती, द्वि.सं.22
5कनुप्रिया–धर्मवीर भारती, द्विसं.52

पांचाली रासलीला से पांच–पांच व्यक्तियों से युद्ध संघर्ष करती हुई परम्परा रूपी धारा–राधा आज अपनी चीख पुकार सुना रही है

'क्या मैं सिर्फ एक सेतु थी तुम्हारे लिए
लीला भूमि और युद्ध क्षेत्र में
अलह्य अन्तराल में।'[6]

धर्मवीर भारती ने 'अन्धायुग' एवं 'कनुप्रिया' कविता को प्रबन्धात्मक दृष्टि से प्रस्तुत किया है। इस युग को तथा प्राक् युग को 'अन्धायुग' बताया है जिसमें 'पांचाली' की लज्जा लूटी जाती है, वीर योधा भीम, आचार्य गण, धृतराष्ट्र एवं अर्जुन सब मौन थे। इनके मौन होने का क्या कारण था। इनके मौन होने का कारण था द्रोपदी अनार्य नाग कन्या थी। आर्यों का इतिहास शौर्यों का रहा है ये पाँच पौन्ड्रिक यूरोपियन थे इसलिए इन्द्र का शासन दुःशासन था। कुँवर प्रकाशसिंह चौहान की दुःशासन कविता में आदिम द्रोपदी तथा आधुनिक नारी की पीड़ा को कवि ने सामने रखा है–'दुःशासन'

'धृत राष्ट्र अन्धा है? न्याय की देवी आँखों पर पट्टी बाँधे है।
दुःशासन पाँचाली का चीर हरण भरी सभा में खींच रहा है
क्योंकि धर्म बाजी हार गया है। सव्यसाची मौन है
आचार्य नेत्र बंद किये हैं पितामह शीश झुकाये हैं
कृष्णा (काली द्रोपदी) की पुकार कोई सुनने वाला नहीं है
ओ नीच अब वीर भीम, अपूर्व प्रतिज्ञा करेगा
भविष्य में, तुम्हारी निर्दय भुजायें उखाड़ कर
फेंक देगा, हृदय फाड़कर वह नरसिंह
रक्त पीयेगा, द्रोपदी की काली घुंघराली अलकें
नागिन के समान लहराती हुई रुधिर में
स्नान करके ही शांत होगी।'[7]

यहाँ द्रोपदी को नाग कुल की बताया गया है जिसका सम्बन्ध द्रविड़ जाति से था द्रोपदी द्रुपद राजा था जो द्रविड़ था कृष्ण वर्ण था। द्रोपदी को कृष्णा इसलिए कवि ने कहा है कि वे कृष्ण वर्ण या मेघ वर्ण की थी। कृष्णा का सही नाम सान्ता–शान्ता था। द्रोपदी की चोटी घुंघराले बालों की थी। द्रविड़ स्त्रियों के केश काले तथा घने काले, नागिन जैसे एवं घुंघराले होते हैं यही द्रविड़ जाति स्त्रियों की विशेषताएँ होती है। द्रविड़ शब्द का संक्षेपण द्रविड़–दृढ़–डिड–डेड हो गया है। यह भाषा अपकर्ष है। आज अनार्य जातियों को बिसलत्व शूद्रत्व में धकेल दिया गया है।

भारतीयता अर्थात् आर्यसंस्कृति की रक्षा के लिए देव जाति के अधिपति कृष्णचंद्र (इन्द्र) ने सुधर्म, सुराज, राष्ट्रवाद एवं जातीय रक्षा को सर्वोपरि माना तथा नियति को दुत्कार दिया भारती लिखते हैं –

स्वधर्म आखिर मेरे लिए स्वधर्म क्या है?
न्याय–अन्याय सद्–असद् विवेक–अविवेक
कसौटी क्या है? आखिर कसौटी क्या है?[8]

धर्मवीर भारती ने पुराख्यान काव्य को परम्परा निर्वाह के साथ जीवनजीकर आधुनिकता की रक्षा करनी चाहिए।

6कनुप्रिया–धर्मवीर भारती, द्वि.सं.34
7क्षितिज–कुंवर प्रकाशसिंह चौहान, खीरी जिला परिषद् प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स लखीम पुर खीरी, उ.प्र. संस्करण–1968,पृ.सं. 19,20
8कनुप्रिया–धर्मवीर भारती,द्वि. सं.74